9 किताबुम् मर्क़ूम ۝

٩- كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝

10 वैलुंय् यौमइज़िल् लिल्
मुकज़्ज़िबीन ۝

١٠- وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝

11 अल् लज़ीना युकज़्ज़िबूना
बि यौमिद्दीन ۝

١١- الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝

12 वमा युकज़्ज़िबु बिही
इल्ला कुल्लु मुअ़्तदिन् असीम ۝

١٢- وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا
كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝

13 इज़ा तुत्लाअ़लैहि आयातुना क़ाला असातीरुल्
अव्वलीन ۝

١٣- اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا
قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝

14 कल्ला बल् सकत रानाअ़ला क़ुलूबिहिम् मा कानू
यक्सिबून ۝

١٤- كَلَّا بَلْ ۜ
رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

15 कल्ला इन्नहुम् अन्
रब्बिहिम् यौमइज़िल् ल
महजूबून ۝

١٥- كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ
يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ۝

16 सुम्मा इन्नहुम् ल सालुल्
जहीम ۝

١٦- ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ۝

17 सुम्मा युक़ालु हाज़ल् लज़ी
कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून ۝

١٧- ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ
كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝

18 Indeed, the written record of the deeds of the righteous is written in "IL-LIYYEEN"

19 And how would you comprehend what "IL-LIYYEEN" is?

20 It is a Record House of good deeds. In it all is written down.

21 It is witnessed with pleasure by those angels who are near to ALLAH.

22 Indeed the righteous will be in heaven in blissful delight.

23 Sitting on couches of dignity commanding a sight all around.

24 You will see in their faces a beaming brightness full of bliss.

25 They will be served with the pure and sealed wine.

26 With a sealing of musk. For this, then let all those who wish to excel others, let them endeavour to excel in achieving this.

27 And it will be blended with the water of TASNEEM.

18 हां, बेशक़ नेक लोगों के नामाए आमाल सबसे ऊंचे रुतबे वाले लोगों के रजिस्टर में यानी "इल्-लिय्-यीन" में दर्ज है.

19 और तुमको क्या मालूम के "इल्-लिय्-लीन" क्या चीज़ है?

20 ये नेक आमालों का दफ़्तर है. इसमें सब कुछ लिखा हुआ है.

21 उसे वो फ़रिश्ते जो अल्लाह के नज़दीक़ हैं उसे शौक़ से देखते हैं.

22 बेशक़ नेक परहेज़ गार जन्नत के बागों में चैन से होंगे.

23 ऊंची मसनदों पर बैठे नज़ारे कर रहे होंगे.

24 तुम उनके चेहरों से ही उनकी राहतों और मसर्रतों को देख लोगे.

25 उनको बेहतरीन मुहर बंद शराब पिलाई जायेगी.

26 जिस पर मुश्क की मुहर लगी हुई होगी. तो जो लोग दूसरों पर बाज़ी ले जाना चाहते हों वो इस चीज़ को हासिल करने में बाज़ी ले जाने की कोशिश करें.

27 और इसमें 'तस्नीम' के पानी की मिलावट होगी.

18 कल्लाा इन्ना किताा बल्
अब् रारि लफ़ी ज़िल्-लिय्-यीन
ऽ ○

١٨- كَلَّآ إِنَّ كِتٰبَ الْأَبْرَارِ
لَفِىْ عِلِّيِّيْنَ ۝

19 व माा अद् राका मा
ज़िल्-लिय्-यून ऽ ○

١٩- وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ۝

20 किताा बुम् मरक़ूम ॥ ○

٢٠- كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝

21 यश् हदु हुल् मुक़र्रा बून ऽ ○

٢١- يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝

22 इन्नल् अब् रारा लफ़ी
नज़ीम ॥ ○

٢٢- إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِىْ نَعِيْمٍ ۝

23 अलल् अराा इकि यन् ज़ुरून ॥ ○

٢٣- عَلَى الْأَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ۝

24 तज़् रिफ़ फ़ी वुजूहि हिम्
नज़्रा तन् नज़ीम ॥ ○

٢٤- تَعْرِفُ فِىْ وُجُوْهِهِمْ
نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ۝

25 युस् क़ौना मिर् रहीं क़िम्
मख़् तूम ॥ ○

٢٥- يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۝

26 रिख़ता मुहू मिस्क ऽ व फ़ी
ज़ालिका फ़ल् याता नाफ़ा
सिल् मुता नाफ़िस सून ऽ ○

٢٦- خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ
وَفِىْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ۝

27 व मिज़ा जुहू मिन् तस् नीम ॥ ○

٢٧- وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۝

28 A fountain spring from which only those who are nearest to ALLAH will drink.

29 The sinners used to laugh at the Believers.

30 And they used to wink at each other whenever they used to pass by the Believers.

31 And when they used to go back to their own people, they used to make fun of the Believers.

32 And whenever they used to see the Believers, they used to say: "See, these are the people who have gone astray."

33 Though they have not been sent to be guardians over the Believers.

34 But on this Day the Believers will laugh at the Disbelievers.

35 Sitting on couches of dignity commanding a sight all around.

36 Hav'nt the Disbelievers been paid for what they used to do?

28 तस्नीम (जो जन्नत का एक) चश्मा है - उसमें से सिर्फ़ वो बंदे जो अल्लाह के क़रीब हैं - पियेंगे.

29 गुनहगार लोग ईमान वालों की हंसी उड़ाया करते थे.

30 और जब कभी वो ईमान वालों के पास से गुज़रते थे तो आपस में आंख मार कर हिकारत से इशारा करते थे.

31 और जब वो अपने घर वालों के पास वापस जाते तो ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाया और बातें बनाया करते थे.

32 और वो जब कभी मौमिनों को देखते थे तो कहते थे: "ये ही हैं वो लोग जो गुमराह हैं."

33 हालांके वो इन (मौमिनों) पर कोई निगरां बना कर नहीं भेजे गये हैं.

34 तो आज आख़िर रत् के दिन मौमिन लोग (उल्टा) काफ़िरों पर हंसेंगे.

35 और वो ऊंची मसनदों पर बैठे सब तरफ़ नज़ारे कर रहे होंगे.

36 मिल गया ना काफ़िरों को बदला उनकी करतूतों का जो वो किया करते थे?

28 अै नंय् यश् रबु बि हल्
मुक़र्रा बून ۝

29 इन् नल् लजीना अज् रमू
कानू मिनल् लजीना आमानू
यज़् हकून ۝

30 व इज़ा मर्रू बि हिम् याता
ग़ामा ज़ून ۝

31 व इज़न् क़ालाबू इलाअ्
लिहि मुन् क़ालाबू फ़कि हीन ۝

32 व इज़ा रअौ हुम् क़ालू इन्नहाअ
उलाअ इला ज़ालल् लून ۝

33 वमाअ उर् सिलू अलै हिम् हाफ़िज़
जीन ۝

34 फ़ल् यौमल् लजीना आमनू
मिनल् कुफ़्फ़ारि यज़् हकून ۝

35 अलल् अराअ इकि ۝ यन्
ज़ुरून ۝

36 हल् सुव्विब बल् कुफ़्फ़ारु मा
कानू यफ़् अलून ۝

٢٨- عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝

٢٩- إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا
كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ۝

٣٠- وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ۝

٣١- وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ
انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝

٣٢- وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا
إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ۝

٣٣- وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ۝

٣٤- فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ
يَضْحَكُونَ ۝

٣٥- عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ۝

٣٦- هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ
مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

No 84 SURAH INSHI-QAAQ (83)

(CLEAVING APART OF SKY)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 25
WORDS 108, LETTERS 448

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 When the sky is cleft asunder.
2 And obeys the Command of its RABB as it should do as a must.
3 And when the earth is flattened out.
4 And throws out whatever it has with in it and becomes empty.
5 And obeys the Command of its RABB as it should do as a must.
6 O man! You are striving and you should go on striving towards your RABB. So you will meet him (on the Day of Judgement).
7 Then he who is given his record of deeds in his right hand.

नं. 84 सूरह् इन्शि-क़ाक़ (83)

(आसमान का फ़ट जाना)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 25
लफ़्ज़ 108, हरूफ़ 448

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं. जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 जब आसमान फ़ट पड़ेगा.
2 और अपने रब का हुक्म बजा लायेगा जैसा के उसे लाज़िम है.
3 और जब ज़मीन (खींच कर) हमवार कर दी जायेगी.
4 और जो कुछ इसमें है उसे निकाल बाहर करेगी और बिलकुल खाली हो जायेगी.
5 और अपने रब का हुक्म बजा लायेगी जैसा के उसे लाज़िम है.
6 ऐ इंसान! तू अपने रब की तरफ़ पहुंचने की खूब कोशिश करता है. तो तू मौत तक कोशिश किये जा. तू उससे (क़ियामतमें) मिलने वाला है.
7 फिर तब जिसका नामाए आमाल उसके दाहिने हाथ में दिया जायेगा.

नं॰84 सूरा तुल् इन्शि क़ाक़
(83)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 25
लफ़्ज़ 108, हरूफ़ 448

बिस् मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ○

1 इज़स् समाउन् शक़्क़त् ⁄⁄ ○

2 व अज़िनत् लि रब्बिहा व हुक़्क़त् ⁄⁄ ○

3 व इज़ल् अर्ज़ु मुद्दत् ⁄⁄ ○

4 व अल्क़त् मा फ़ीहा वाता ख़ल्लत् ⁄⁄ ○

5 व अज़िनत् लि रब्बिहा व हुक़्क़त् ⁄⁄ ○

6 याअय्युहल् इन्सानु इन्नका कादिहुन् इलारब्बिका कद्हुन् फ़ मुलाक़ीह ⁄⁄ ○

7 फ़ अम्मा मन् ऊतिया किताबहू बि यमीनिह् ⁄⁄ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۙ

٢- وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا
وَحُقَّتْ ۙ

٣- وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ۙ

٤- وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا
وَتَخَلَّتْ ۙ

٥- وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا
وَحُقَّتْ ۙ

٦- يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ
اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا
فَمُلٰقِيْهِ ۚ

٧- فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ
بِيَمِيْنِهٖ ۙ

8 He will have an easy time with his account.

9 And he will return to his people full of joy.

10 But he who is given his record of deeds from behind his back.

11 He will cry and pray for death.

12 And he will be thrown in blazing fire

13 He had lived amongst his people - rejoicing.

14 Thinking, that he will never have to return to ALLAH.

15 Why not? His RABB was always watching him.

16 So I (i.e. ALLAH) swear by the ruddy glow of sun set.

17 And also by the night and by all that it covers in darkness.

18 And by the moon when it is at full moon.

19 You will surely advance stage by stage.

20 Then what is the matter with them that they do not believe?

8 तो उससे आसानी से हिसाब लिया जायेगा.

9 और वो ख़ुश ख़ुश अपने घर वालों में वापस जायेगा.

10 और जिसको उसका नामाए आमाल उसकी पीठ के पीछे से दिया जायेगा.

11 वो चीख़ेगा और मौत को पुकारेगा.

12 और उसे जहन्नम की आग में झोंक दिया जायेगा.

13 वो अपने घर वालों में ही मगन रहा था.

14 और वो समझता था के वो कभी अल्लाह की तरफ़ लौट कर नहीं जायेगा.

15 क्यों नहीं? उसका रब तो उसे देखता रहा था.

16 हमें (यानी अल्लाह को) शाम के आसमान की सुरख़ी की क़सम.

17 और रात की भी और इन तमाम चीजों की जिनको वो (अपने अंधयारे में) समेट कर जमा कर लेती है.

18 और चांद की जब वो पूरा (चौंधवी का) हो जाये.

19 आप ज़रूर दरजा ब दरजा ऊंचे रुतबे तक पहुंचोगे.

20 तो उन लोगों को क्या हो गया है के ईमान नहीं लाते.

8 फ़ सौफ़ा युहा सबु हिसा
बंयु यसीरा ॥ ०

٨- فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۝

9 व यन् क़लिबु इलाा अह् लिही
मस् रूरा ॥ ०

٩- وَيَنقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝

10 व अम्मा मन् ऊतिया किता
बहू वराआ अह् रिह् ॥ ०

١٠- وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝

11 फ़ सौफ़ा यद्अू सुबूरा ॥ ०

١١- فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ۝

12 व यस्लाा सअ़ीरा ॥ ०

١٢- وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝

13 इन्नहू काना फ़ीही अह् लिही
मस् रूरा ॥ ०

١٣- إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝

14 इन्नहू ज़न्ना अल् लंय् यहूर ۝

١٤- إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ۝

15 बलाा ۝ ∴ इन्ना रब्बहू
काना बिही बसीरा ॥ ०

١٥- بَلَىٰ ۚ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝

16 फ़लाा उक़्सिमु बिश् शफ़क़ ॥ ०

١٦- فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۝

17 वल् लैलि वमा वसक़ ॥ ०

١٧- وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝

18 वल् क़ामरि इज़त्ता सक़ ॥ ०

١٨- وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝

19 ल तरकबुन्ना त़बा क़न् अन्
त़बक़ ॥ ०

١٩- لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ۝

20 फ़मा लहुम् ला युअ्
मिनून ॥ ०

٢٠- فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

21 And when Qur'aan is recited to them, they do not bow down in adoration.
(Do Sajda Tilawat)

21 और जब इनके सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वो सजदा नहीं करते.
(सजदा तिलावत कीजिये)

22 But on the contrary, the Disbelievers reject it.

22 बल्के काफ़िर उल्टा इसे झुठलाते हैं.

23 But ALLAH has full knowledge about what they conceal in their hearts.

23 लेकिन अल्लाह उनकी उन बातों को जो वो सीने में छुपाते हैं ख़ूब जानता है.

24 So announce to them a painful punishment.

24 लिहाज़ा इन्हें दरद नाक अज़ाब की बशारत दे दीजिये.

25 Except to those who believe and do good deeds. For them is an un-ending reward.

25 सिवाये उनके जो ईमान लाये और नेक आमाल करते रहे. उनके लिये तो कभी ख़त्म ना होने वाला बदला है.

No 85 SURAH BURUJ (27)

(THE ZODIACAL SIGNS OF STARS)
MAKKI, RUKU 1, AYATS 22
WORDS 109, LETTERS 475

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 I (ALLAH) swear by the sky displaying the Zodiacal signs of stars.

नं. 85 सूरह बुरूज (27)

(सितारों के आसमानी क़िले)

मक्की, रुकूअ 1, आयात 22
लफ़्ज़ 108, हरूफ़ 475

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं. जो बड़ा मेहरबान, निहायते रहम वाला है.

1 मुझे (यानी अल्लाह को) आसमान की क़सम जिसमें सितारों के मज़बूत बुरूज

21 व इज़ा क़ुरिआ अलैहि मुल्
क़ुरआनु लाा यस्जुदून ۩ ○
(सज्दा तिलावत कीजिये)

٢١- وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ
لَا يَسْجُدُونَ ۩ ۝

22 बलिल् लज़ीना काफ़रू यु
कज़्ज़िब़ून ○

٢٢- بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ۝

23 वल्लाहु अअ्लमु बिमा
यूअ़ून ○

٢٣- وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝

24 फ़ बश्शिर् हुम् बि अ़ज़ाबिन् अलीम ○

٢٤- فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

25 इल्लल् लज़ीना आमनू
व अ़मिलुस् सालिहाति लहुम्
अज्रन् ग़ैरु मम्नून ○

٢٥- إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

नं. 85 सूरा तुल् बुरूज (27)

آيَاتُهَا ٢٢ سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ ٢٧ رُكُوعُهَا ١

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 22
लफ़्ज़ 108 हरूफ़ 475

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ○

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1 वस् समाइ ज़ातिल्
बुरूज ○

١- وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ۝

2 And I (ALLAH) swear by the promised Day (of Judgement)

3 And I (ALLAH) swear by those who are gathered and by the Day of Judge--ment on which they are gathered.

4 That the diggers of the ditch were themselves destroyed.

5 In the fire (in the ditch) which was full of burning wood.

6 As they sat around it.

7 And they (the Disbelievers) were themselves witnessing, whatever distress they were causing to the Believers.

8 And they ill treated the Believers for no other reason than that they believed in ALLAH - the Mighty, worthy of all praise.

9 WHOSE sovereignty spreads over the heavens and the earth and ALLAH is witness over every thing.

(क़िले) हैं.

2 मुझे (यानी अल्लाह को) क़सम है उस क़ियामत के दिन की जिसका वायदा है.

3 मुझे (यानी अल्लाह को) क़सम है हाज़िर होने वाले लोगों की और उस क़ियामत के दिन की जिसमें लोगों की हाज़री होगी.

4 के खंदक़ के खोदने वाले काफ़िर खुद ही (आग में) हलाक हो गये.

5 यानी खंदक़ की आग में जिसमें (इन्होंने खुद) खूब इंधन झौंक रखा था.

6 जबके वो लोग उसके चारों तरफ़ बैठे हुए थे.

7 और वो काफ़िर (जो ईमान वालों पर ज़ुल्म कर रहे थे) उसे खुद गवाह बन कर देख रहे थे.

8 और उन ईमान वालों से उनकी दुश्मनी इसके सिवा कुछ और ना थी के वो लोग अल्लाह पर ईमान ले आये थे. अल्लाह जो जबर दस्त तारीफ़ों के लायक़ है.

9 वो ही अल्लाह जिसकी बादशाहत आसमानों और ज़मीन पर है. और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है.

٢-وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝	2 वल् यौमिल् मौ अ़ूद ۝
٣-وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝	3 व शाहि दिंव् व मश् हूद ۝
٤-قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝	4 क़ुतिला अस्हा बुल् उख़् दूद ۝
٥-النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝	5 अन् नारि ज़ातिल् वक़्द ۝
٦-اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۝	6 इज़् हुम् अ़लैहा क़ुअ़ूद ۝
٧-وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۝	7 व हुम् अ़ला मा यफ़् अ़लूना बिल् मुअ़् मिनीना शुहूद ۝
٨-وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝	8 वमा नाक़ामू मिन् हुम् इल्लाअ़ अंय् युअ़् मिनू बिल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल् हमीद ۝
٩-الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝	9 अल् लज़ी लहू मुल् कुस् समा वाति वल् अरज़् ۝ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद ۝

10 Those who persecute Believers – men and women and do not repent afterwards will surely get the punishment of hell as well as the punishment of burning in hell.

11 Surely for those who believe and do good deeds are gardens with rivers flowing by. That is the greatest success indeed.

12 Surely the grip (for punishment) of your RABB is strong.

13 It is HE WHO creates and HE will do it again.

14 And HE is Forgiving and Loving.

15 HE is RABB of Glorious Throne.

16 HE does what HE pleases.

17 Has the story of forces reached you?

18 Forces of Pharoah and Samud.

19 Yet the Disbelievers persist in their denial of Truth.

20 But ALLAH encircles them from all sides.

21 But no, this indeed is a glorious Qur'aan.

10 जिन लोगों ने मोमिन मरदों और मोमिन औरतों को तकलीफें दीं और फिर तौबा नहीं की उनको दोज़ख़ की सज़ा होगी और वो भड़कती हुई आग में जलने की सज़ा भी पायेंगे.

11 और जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे उनके लिये जन्नत के बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी. और ये ही बड़ी कामयाबी है.

12 और तुम्हारे परवर दिगार की (अज़ाब की) पकड़ बड़ी सख़्त है.

13 वो ही पहली बार पैदा करता है और वो ही दुबारा पैदा करेगा.

14 वो बख़्शने वाला है और मुहब्बत करने वाला भी.

15 वो ख़िज़्ज़त वाले अ़र्श (तख़्त) का मालिक है.

16 जो चाहता है वो करता है.

17 क्या तुम तक लश्करों की ख़बर पहुंची है?

18 फ़िरऔ़न और समूद के लश्करों की.

19 मगर काफ़िर झुठलाने में ही लगे हुए हैं.

20 लेकिन अल्लाह ने उन्हें चारों तरफ़ से घेरे में लिये हुआ है.

21 बल्के नहीं, ये क़ुरआन बेशक़ अ़ज़ी-मुश्-शान है.

10 Those who persecute Believers – men and women and do not repent after--wards will surely get the punishment of hell as well as the punishment of burning in hell.

11 Surely for those who believe and do good deeds are gardens with rivers flowing by. That is the greatest success indeed.

12 Surely the grip (for punish--ment) of your RABB is strong.

13 It is HE WHO creates and HE will do it again.

14 And HE is Forgiving and Loving.

15 HE is RABB of Glorious Throne.

16 HE does what HE pleases.

17 Has the story of forces reached you?

18 Forces of Pharoah and Samud.

19 Yet the Disbelievers persist in their denial of Truth.

20 But ALLAH encircles them from all sides.

21 But no, this indeed is a glorious Qur'aan.

10 जिन लोगों ने मोमिन मरदों और मोमिन औरतों को तकलीफें दीं और फिर तौबा नहीं की उनको दोज़ख़ की सज़ा होगी और वो भड़कती हुई आग में जलने की सज़ा भी पायेंगे.

11 और जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे उनके लिये जन्नत के बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी. और ये ही बड़ी कामयाबी है.

12 और तुम्हारे परवर दिगार की (अज़ाब की) पकड़ बड़ी सख़्त है.

13 वो ही पहली बार पैदा करता है और वो ही दुबारा पैदा करेगा.

14 वो बख़्शने वाला है और मुहब्बत करने वाला भी.

15 वो ज़िज़्ज़त वाले अ़र्श (तख़्त) का मालिक है.

16 जो चाहता है वो करता है.

17 क्या तुम तक लश्करों की ख़बर पहुंची है?

18 फ़िरऔ़न और समूद के लश्करों की.

19 मगर काफ़िर झुठलाने में ही लगे हुए हैं.

20 लेकिन अल्लाह ने उन्हें चारों तरफ़ से घेरे में लिये हुआ है.

21 बल्के नहीं, ये क़ुरआन बेशक़ अ़ज़ी-मुश्-शान है.

10 इन्नल् लज़ीना फ़ातानुल् मुअ् मिनीना वल् मुअ् मिनाति सुम्मा लम् यतूबू फ़ लहुम् अ़ज़ाबु जहन्नमा व लहुम् अ़ज़ा बुल् हरीक़ ؕ ۝

١٠- إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۝

11 इन्नल् लज़ीना आमनू व अ़मि लुस् सालि हाति लहुम् जन्ना तुन् तज्री मिन् तह्ति हल् अन्हार ؕ ज़ालि कल् फ़ौज़ुल् कबीर ؕ ۝

١١- إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝

12 इन्ना बत्शा रब्बिका ल शदीद ۝

١٢- إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝

13 इन्नहू हुवा युब्दिउ व युअ़ीद ۝

١٣- إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ۝

14 व हुवल् ग़फ़ूरुल् वदूद ۝

١٤- وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ۝

15 ज़ुल् अ़र्शिल् मजीद ۝

١٥- ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝

16 फ़अ़्ज़ आलुल् लिमा युरीद ؕ ۝

١٦- فَعَّالٌ لِمَا يُرِيدُ ۝

17 हल् अतताका ह़दीसुल् जुनूद ۝

١٧- هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝

18 फ़िर् औना व समूद ؕ ۝

١٨- فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ۝

19 बल् लिल् लज़ीना कफ़रू फ़ी तक्ज़ीब ۝

١٩- بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝

20 वल्लाहु मिंव् वराइहिम् मुह़ीत ۝

٢٠- وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ۝

21 बल् हुवा क़ुर् आनुम् मजीद ۝

٢١- بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ۝

22 Well preserved in LOHE-MAHFOOZ (i.e. in a Tablet preserved with ALLAH).

22 जो लौहे महफ़ूज़ में लिखा है (यानी जो अल्लाह की आसमानी किताब में लिखा हुआ है और अल्लाह के पास हिफ़ाज़त से रखा हुआ है.)

No 86 SURAH ṬAARIQ (36)

नं. 86 सूरह् त़ारिक़ (36)

(THE NIGHT STAR)

(रात का रौशन तारा)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 17
WORDS 61, LETTERS 254

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 17
लफ़्ज़ 61, हरूफ़ 254

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहर बान, निहायत रहम वाला है.

1 I (i.e. ALLAH) swear by the sky and by that star which comes out at night.
2 And how will you comprehend what is that which comes out at night?
3 It is the star of piercing brightness.
4 There is no human soul without a guardian over it.

1 मुझे (यानी अल्लाह को) क़सम है आसमान की और रात को नमूदार होने वाले सितारे की.
2 और तुमको क्या मालूम के रात को नमूदार होने वाली चीज़ क्या है?
3 वो है तेज़ चमकने वाला तारा.
4 और कोई जान ऐसी नहीं जिसके ऊपर कोई निगह बान मुक़र्रर नहीं

5 So let man consider from what he is created.

5 तो इंसान ये ही देख ले के वो किस चीज़ से पैदा किया गया है.

6 He is created from the spurting fluid.

6 वो एक उछलते हुए पानी से पैदा हुआ है.

22 फ़ी लौ हिम् मह् फ़ूज़ ٥

नं॰86 सूरा तुत तारिक़ (36)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 17
लफ़्ज़ 61 हरूफ़ 254

बिस् मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ०

1 वस् समाइ मत् तारिक़ ॥०

2 वमा अदराका मत् तारिक़ ॥०

3 अन् नज् मुस् साक़िब् ॥०

4 इन् कुल्लु नफ़्सिल् लम्मा अलैहा हाफ़िज़ ५०

5 फ़ल् यन् ज़ुरिल् इन्सानु मिम्मा खुलिक़ ५०

6 खुलिक़ा मिम्मा इन् दाफ़िक़ ॥०

٢٢-فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝

سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١-وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝

٢-وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝

٣-النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝

٤-اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝

٥-فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝

٦-خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۝

7 That gushes out from between the back bone and the ribs.

8 Surely ALLAH has power to bring him back to life again.

9 On the Day when all hidden thoughts will be searched out.

10 (Man) will have no power and no helper.

11 I (ALLAH) swear by the rain producing sky.

12 And I (ALLAH) swear by the earth which opens up (for the growth of vegetation).

13 That this Qur'aan distinctly distinguishes between good and evil.

14 And it is no trifle pleasantry.

15 They (the Disbelievers) are hatching up schemes.

16 But I (i.e. ALLAH) am also planning a scheme.

17 So bear with the Dis-believers with patience and (O Messenger!) give them respite for a while.

7 जो पीठ और सीने की हड्डियों के दरमियान से निकलता है.

8 बेशक़ अल्लाह उसे दुबारा जिंदा करने की क़ुदरत रखता है.

9 जिस दिन दिलों के भेद जांचे जायेंगे.

10 (इंसान का) ना कुछ ज़ोर होगा और ना कोई मददगार.

11 मुझे (यानी अल्लाह को) आसमान की क़सम जो पानी बरसाता है.

12 और मुझे (यानी अल्लाह को) ज़मीन की क़सम जो (सब्ज़ा पैदा करने के लिये) फ़ट जाती है.

13 के ये क़ुरआन हक़ और बातिल (यानी सच और झूठ) में एक फ़ैसला कर देने वाला कलाम है.

14 और ये कोई हंसी मज़ाक़ नहीं.

15 ये (काफ़िर) कुछ चालें चल रहे हैं.

16 और मैं (यानी अल्लाह) भी एक चाल चल रहा हूं.

17 तो (ऐ पैग़म्बर!) आप इनसे सबर से काम लीजिये और इन्हें थोड़े दिनों की मुहलत ले लेने दीजिये.

7 यख़् रुजु मिम् बैनिस् सुल्बि वत् तराइब् ७०	٧- يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۝
8 इन्नहू अ़ला रज् ज़िही ल क़ादिर् ८०	٨- إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝
9 यौमा तुब् लस् सराइर् ९०	٩- يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۝
10 फ़मा लहू मिन् क़ुव्वा तिंव् वला नासिर् १०	١٠- فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝
11 वस् समाइ ज़ातिर् रजअ़् ११०	١١- وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝
12 वल् अर्ज़ि ज़ातिस् सद्अ़् १२०	١٢- وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝
13 इन्नहू ल क़ौलुन् फ़सल् १३०	١٣- إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝
14 वमा हुवा बिल् हज़ल् १४०	١٤- وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝
15 इन्ना हुम् यकीदूना कैदा १५०	١٥- إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝
16 व अकीदु कैदा १६०	١٦- وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝
17 फ़ मह्हि लिल् काफ़िरीना अम्हिल् हुम् रुवैदा १७०	١٧- فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝

No 87 SURAH A'ALAA (8)

(THE MOST HIGH)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 19, WORDS 72, LETTERS 299

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 Glorify the name of your RABB- Most High.
2 WHO creates and gives proportions.

3 WHO determines things according to measure and guides them towards their goal.
4 WHO brings out the green pastures.
5 Then turns them to darkish rabbish dust.
6 (O Messenger!) WE shall make you recite Qur'aan by degrees so that you will not forget.
7 Except as ALLAH wills for HE knows the visible and the invisible.

नं॰ 87 सूरह् अअ्ला (8)

(आ़ली शान वाला)

मक्की, रूकूअ़ 1, आयात 19
लफ़्ज़ 72, हरूफ़ 299

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं. जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अपने रब की तस्बीह करो जो आ़ली शान है.
2 जिसने पैदा किया और (जिस्म में) तनासुब क़ायम किया.

3 जिसने चीजों की तक़दीर और उनके मुक़द्दर को ठहरा कर उन्हें अपने राह से लगाया.

4 जिसने ज़मीन से हरा भरा चारा निकाला.
5 फ़िर उसे काले से रंग का कूड़ा कचरा कर दिया.
6 (ऐ पैग़म्बर!) हम आपको धीरे धीरे (आसानी से) क़ुरआन पढ़ायेंगे के आप उसे (कभी) नहीं भूलेंगे.

7 सिवाये उसके के जिसे अल्लाह खुद भुला देना चाहे क्योंके वो ज़ाहिर को भी जानता है और पोशीदा को भी.

नं॰87 सूरा तुल् अअ्लाा (8)

سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ

मक्की, रूकूअ् 1, आयात 19
लफ़्ज़ 72, हरूफ़ 299

बिस् मिल्लाा हिर् रह्मा निर् रहीम ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 सब्बिह् इस्मा रब्बिक् कल् अअ्लाा ॥ ०

١- سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ

2 अल् लज़ी ख़लाक़ा फ़ सव्वाा ॥ ०

٢- الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۙ

3 वल् लज़ी क़द् दारा फ़ हदा ॥ ०

٣- وَالَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۙ

4 वल् लज़ी अख़्रा जल् मरअ़ा ॥ ०

٤- وَالَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۙ

5 फ़ जाअ़ा लहू ग़ुस्साा अह्वा ॥ ०

٥- فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ۙ

6 स नुक़्रिउ उका फ़ला तन्सा ॥ ०

٦- سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۙ

7 इल्लाा माशाा अल्लाह ॥ इन्नहू यअ़्लमुल् जह्रा वमा यख़्फ़ा ॥ ०

٧- اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۚ
اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۙ

8 And WE shall make it easy for you to follow the straight path.

9 Therefore continue to remind men so long there is a hope of profit from such reminders.

10 Those who fear ALLAH, will heed to it.

11 And only the most unfortunate will avoid it.

12 Who will burn in the terrible fire.

13 In which he will neither die or live.

14 But he will succeed who advances in purity.

15 And who recites the name of his RABB and prays with devotion.

16 But you (o man!) prefer the life of this world.

17 Though the Hereafter is better and more enduring.

18 And this is (also written) in the earlier Books of Revelations.

19 In the Books of Ibraheem ('Allehis Salam) and Musa ('Allehis Salam).

8 और हम आपके लिये (सीधी राह पर चलने के लिये) और ज़्यादा आसानी पैदा कर देंगे.

9 लिहाज़ा आप नसीहत करते जाइये जहां तक नसीहत से नफ़ा होने की उम्मीद हो.

10 तो वो जो अल्लाह से डरते हैं इससे नसीहत पकड़ेंगे.

11 और जो इंतहाई बद बख़्त होगा वो ही गुरेज़ करेगा.

12 जो क़ियामत की तेज़ आग में जलाया जायेगा.

13 वहां वो ना मरेगा और ना जियेगा.

14 लेकिन वो कामयाब हुआ जो पाकीज़गी में आगे बढ़ता रहा.

15 और जो अपने रब का नाम लेता रहा (ज़िक्र) और (ख़ुश दिली से) नमाज़ पढ़ता रहा.

16 मगर तुम लोग तो दुनिया की ज़िंदगी को ही तरजीह देते हो.

17 हालांके आख़िरत की ज़िंदगी बेहतर है - हमेशा बाक़ी रहने वाली.

18 और ये ही बात पहले नाज़िल हुए सहीफ़ों (आसमानी किताबों) में भी लिखी है.

19 यानी इब्राहीम (अलैहिस सलाम) और मूसा (अलैहिस सलाम) के सहीफ़ों में.

8 वनु यस्सि रुका लिल् युस्रा ۝

٨- وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۝

9 फ़ ज़क्किर् इन् नाफ़ाअ़ति ज़्ज़िक्रा ۝

٩- فَذَكِّرْ إِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۝

10 स यज़् ज़क्कर, मंय् यख़्शा ۝

١٠- سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۝

11 व याता जन्नबु हल् अश्क़ा ۝

١١- وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ۝

12 अल् लज़ी यस् लन् नारल् कुब्रा ۝

١٢- الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۝

13 सुम्मा ला यमूतु फ़ीहा वला यह्या ۝

١٣- ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيٰى ۝

14 क़द् अफ़्लाहा मन् त ज़क्का ۝

١٤- قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝

15 व ज़ाकर् इस्मा रब्बिहीं फ़ स़ल्ला ۝

١٥- وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝

16 बल् तुअ् सिरूनल् ह़याद् दुन्या ۝

١٦- بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝

17 वल् आख़िरतु ख़ैरुंव् व अब्क़ा ۝

١٧- وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَّأَبْقٰى ۝

18 इन्ना हाज़ा ल फ़िस् सुहुफ़िल् उला ۝

١٨- إِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولٰى ۝

19 सुहुफ़ि इब्रा हीमा व मूसा ۝

١٩- صُحُفِ إِبْرٰهِيمَ وَمُوسٰى ۝

No 88 SURAH GHAASHIYA (68)

(THE OVERWHELMING EVENT)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 26, WORDS 93, LETTERS 384

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 Has the news reached you of the Overpowering Event (i.e. of the Day of Judgement).
2 That Day some faces will look scared with fear.
3 Labouring hard and feeling weary.
4 While they will enter the burning Fire.
5 And they will be given the boiling water from the hot spring to drink.
6 They will have no food except bitter thorn tree.
7 Which will neither nourish nor satisfy the hunger.
8 And many faces that Day will be joyous.
9 Well pleased with their striving.

नं॰ 88 सूरह् ग़ाशिया (68)

(सारे आलम पर छा जाने वाली आफ़त)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 26
लफ़्ज़ 93, हरूफ़ 384

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क्या तुम तक उस छा जाने वाली आफ़त की ख़बर पहुंची है. (यानी क़ियामत की).
2 उस रोज़ कुछ चेहरे ख़ौफ़ ज़दह् होंगे.
3 सख़्त मुशक़्क़त कर रहे होंगे- थके मांदे होंगे.
4 जब वो दहकती आग में दाख़िल होंगे.
5 और उनको एक खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जायेगा
6 उनके लिये वहां कोई ख़ाना नहीं होगा सिवाये कांटे दार दरख़्त के.
7 जो ना जिस्म को लगेगा और ना ही भूक को मारेगा.
8 और कितने ही चेहरे उस रोज़ ख़ुश् ख़ुश् होंगे.
9 अपने आमाल के बदले ख़ुश् ख़ुश्.

मक्की, रूकूअ़ 1, आयात 26
लफ़्ज़ 93 हरूफ़ 384

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 हल् अताका ह़दीसुल् ग़ाशि यह् ○

١- هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝

2 वुजूहुंय् यौमइज़िन् ख़ाशि अह् ○

٢- وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝

3 आमिलतुन् नासिबह् ○

٣- عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝

4 तस्लाना नारन् ह़ामियह् ○

٤- تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝

5 तुस्क़ा मिन् अ़ैनिन् आनियह् ○

٥- تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝

6 लैसा लहुम् त़आमुन् इल्ला मिन् ज़रीअ़् ○

٦- لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۝

7 ला युस्मिनु वला युग़्नी मिन् जूअ़् ○

٧- لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۝

8 वुजूहुंय् यौमइज़िन् नाअ़िमह् ○

٨- وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝

9 लिस्अ़्यिहा राज़ियह् ○

٩- لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝

10 In the gardens of Paradise on high.
11 Where they will never hear any idle talk.
12 There would be streams of running water.
13 And there would be raised up couches.
14 And the (drinking) glasses would be well placed.
15 And cushions set in rows.
16 And rich carpets all spread out.
17 Do they not look at the camels - how they are created.
18 And at the sky that how it is raised high.
19 And at the mountains that how they are fixed.
20 And at the earth that how it is spread out.
21 Therefore continue to remind them, for you are one only to remind.
22 You are not a warden (or guardian) over them.
23 But if any one turns his back and rejects ALLAH.
24 ALLAH will punish him with a severe punishment.

10 आली मुक़ाम जन्नत के बाग़ों में.
11 वहां वो कोई बेहूदा बात नहीं सुनेंगे.
12 उसमें पानी के चश्मे बह रहे होंगे.
13 उसके अंदर ऊंची ऊंची मसनदें लगी होंगी.
14 और प्याले सजे होंगे.
15 और गाव तकियों की क़तारें लगी हुई होंगी.
16 और उम्दा क़ालीन बिछे होंगे.
17 तो ये क्या ऊंटों को नहीं देखते के वो कैसे बनाये गये हैं.
18 और आसमान को के कैसे उठाया गया है.
19 और पहाड़ों की तरफ़ के वो किस तरह मज़बूती से खड़े किये गये हैं.
20 और ज़मीन की तरफ़ के वो किस तरह बिछाई गई है.
21 तो (ऐ पैग़म्बर!) आप नसीहत करते जाइये. आप तो बस नसीहत करने वाले ही हैं.
22 आप उन लोगों पर कोई दारोग़ा तो नहीं हैं.
23 लेकिन जो मुंह फ़ेरे और अल्लाह को मानने से इन्कार करे.
24 तो अल्लाह उसे सख़्त सज़ा देगा.

10 फ़ी जन्नतिन् आलि यह् ؕ ○

11 ला तस् मअु फ़ीहा लाग़िय यह् ؕ

12 फ़ीहा अैनुन् जारि यह् ؕ ○

13 फ़ीहा सुरुरुम् मरफ़ूअ़ह् ؕ ○

14 व अक़्वाबुम् मौज़ूअ़ह् ؕ ○

15 व नमारिक़ु मस़फ़ूफ़ह् ؕ ○

16 व ज़राबिय्यु मब्सूसह् ؕ ○

17 अ फ़लाय यन् जुरूना इलल् इबिलि कैफ़ा खुलि क़त् ○ وقف

18 व इलस् समाइ कैफ़ा रुफ़िअ़त् ○ وقف

19 व इलल् जिबालि कैफ़ा नुसि़बत् ○ وقف

20 व इलल् अरज़ि कैफ़ा सुति़ह़त् ○ وقف

21 फ़ज़क्किर् ○ قف इन्नमा अन्ता मुज़क्किर् ○

22 लस्ता अलैहिम् बि मुसैति़र् ؕ ○

23 इल्ला मन् त वल्ला व कफ़र् ؕ ○

24 फ़ युअ़ज़्ज़िबुहुल्लाहुल् अज़ाबल् अक्बर् ○

١٠-فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ ○

١١-لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۙ ○

١٢-فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۙ ○

١٣-فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۙ ○

١٤-وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۙ ○

١٥-وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۙ ○

١٦-وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ؕ ○

١٧-اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ
اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۜ ○

١٨-وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۜ ○

١٩-وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۜ ○

٢٠-وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۜ ○

٢١-فَذَكِّرْ ۘ
اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ؕ ○

٢٢-لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۙ ○

٢٣-اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۙ ○

٢٤-فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ؕ ○

HALF

25 To US, surely is their return.
26 Then it will be for us to take account from them.

आधा

25 बेशक़, उन्हें हमारे पास ही लौट कर आना है.
26 फिर इनसे हिसाब लेना हमारा ही काम है.

NO 89 SURAH FAJR (10) (THE DAWN)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 30
WORDS 137, LETTERS 585

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 I (i.e. ALLAH) swear by the dawn.
2 And by the nights - twice five.
3 And I (ALLAH) swear by the even and the odd (numbers).
4 And by the night when it is about to pass away.
5 Is there not enough evidence (of ALLAH'S mysteries) for those who have understanding?
6 Have you not seen how your RAB dealt with the people of 'AAD (Their prophet was HUD 'Allehis Salaam)

NO 89 सूरह् फ़ज्र (10) (सुबह् सादिक़)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 30
लफ़्ज़ 137, हरूफ़ 585

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 मुझे (यानी अल्लाह को) सुबह सादिक़ की क़सम.
2 और पांच की दुगनी (यानी दस) रातों की क़सम.
3 और मुझे (यानी अल्लाह को) क़सम है बहुतों की और एक की (जैसे 1, 3, 5, 7 और 2, 4, 6, 8)
4 और क़सम है रात की जब वो ख़तम होने पर हो.
5 क्या इन सब बातों में समझ बूझ रखने वालों के लिये अल्लाह की बहुत सी निशानियां नहीं हैं ?
6 क्या तुमने नहीं देखा के तुम्हारे परवरदिगार ने क़ौम आद के साथ कैसा किया था (उनके पैग़म्बर हूद अलैहिस् सलाम थे)

25 इन्ना इलैनाा इयाबा हुम् ॥ ०	अन निस्फ़	٢٥-اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ۝
26 सुम्मा इन्ना अलैना हिसाबा हुम् ९ ०		٢٦-ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۝

नं॰ 89 सूरा तुल् फ़ज्रि (10)

मक्की, रूकूअ़ 1, आयात 30
लफ़्ज़ 137, हरूफ़ 585

बिस् मिल्लाा हिर् रह़्माा निर् रह़ीम ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 वल् फ़जर् ॥ ०	١-وَالْفَجْرِ ۝
2 व लयालिन् अ़श्र् ॥ ०	٢-وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝
3 वश् शफ़्अि वल् वत्र् ॥ ०	٣-وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝
4 वल् लैलि इज़ा यस्र् ८ ०	٤-وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۝
5 हल् फ़ी ज़ालिका क़सा मुल् लिज़ी ह़िज्र् ५ ०	٥-هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ۝
6 अलम् तरा कैफ़ा फ़आ़ला रब्बुका बि आ़द ॥ ०	٦-اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝

7 And with the tribe of Iram - of lofty pillars.
8 The like of whom were never created in the entire region (of Yemen).
9 And with the people of Samud who carved out dwellings in the rocks in the valley of Qura (Their prophet was Saleh 'Allehis Salaam).
10 And with Pharoah of might and power.
11 They all were rebellious (to ALLAH) in their lands.
12 And they had spread mischief upon mischief.
13 So your RABB sacked them with a severe punishment.
14 For surely your RABB is ever watchful.
15 As for man whenever his RABB tries him by honouring him and by providing things for him in his life, he says - "My RABB has honoured me."
16 But whenever his RABB tries him by restricting his sub-sistence he says - "My RABB has humiliated him."

7 और क़ौम इरम के साथ जिनके महल ऊंचे सुतूनों वाले थे.
8 जिनके मानिन्द और कोई क़ौम मुल्क (यमन) में पैदा नहीं की गई थी.
9 और जो क़ौम समूद के साथ किया था जो क़ुरा की वादी में पहाड़ तराश कर घर बनाते थे. (उनके पैग़म्बर सालिह अलैहिस सलाम थे)
10 और फ़िरऔन के साथ जो ताक़त और रोब वाला था.
11 ये सब अपने अपने मुल्कों में (अल्लाह के रिवलाफ़) सरकश हुए थे.
12 और उनमें फ़साद और ख़राबियां फ़ैला रखी थी.
13 तो तुम्हारे रब ने उन पर अपने अज़ाब के कोड़े बरसाये.
14 क्योंके बेशक़ तुम्हारा रब हर वक़्त ताक लगाये रहता है.
15 लेकिन इंसान है के जब उसे उसका रब आज़माता है और ज़िज़्ज़त और निज़्मतें अता करता है तो कहता है - "क्या ख़ूब, मेरे रब ने मुझे ज़िज़्ज़त बख़्शी.
16 लेकिन जब उसका रब उसे दूसरी तरह से आज़माता है और उसकी रोज़ी उस पर तंग कर देता है तो वो अफ़सोस से कहता है - "मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया."

7 इरामा ज़ातिल् ज़िमाद ॥०

8 अल् लतीं लम् युख़्लक़ मिस्
लुहा फ़िल् बिलाद ॥०

9 व समू दल् लज़ीना ज़ाबुस्
सख़्रा बिल् वाद ॥०

10 व फ़िर् औना ज़िल् औताद ॥०

11 अल् लज़ीना तग़ौ फ़िल् बिलाद ॥०

12 फ़ अक्सरू फ़ीहल् फ़साद ॥०

13 फ़ सब्बा अलैहिम् रब्बुका
सौता अज़ाब ॥०

14 इन्ना रब्बका ल बिल् मिर्
साद ॥०

15 फ़ अम्मल् इन्सानु इज़ा मब्
तलाहु रब्बुहू फ़ अक्रामहू व
नअ़्मा आमाहू ॥ फ़ यक़ूलु
रब्बी अक्रमन ॥०

16 व अम्मा इज़ा मब्तलाहु फ़
क़दारा अलैहि रिज़्क़हू ॥ फ़
यक़ूलु रब्बी अहानन ॥०

٧- إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝

٨- الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۝

٩- وَثَمُودَ الَّذِينَ
جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝

١٠- وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۝

١١- الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝

١٢- فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۝

١٣- فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ
سَوْطَ عَذَابٍ ۝

١٤- إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝

١٥- فَأَمَّا الْإِنسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ
فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ ۙ
فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۝

١٦- وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ
فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۙ
فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ۝

17 No, no, but you do not honour the orphans.
18 Nor do you encourage one another to feed the poor.

19 And you greedily devouver others inheritance.
20 And you love wealth with all your heart.
21 But no, this is not so. When the earth is pounded and pounded to dust.

22 And when your RABB will come with HIS angels rows upon rows (in the spread up of Maidan-e-Hashr)
23 And on that Day Hell will be brought nearby. Then on that Day man will understand. But then how that understanding will help him.
24 He will say- "Alas! Would that I had sent before (some good deeds) for my this life!"
25 No one can punish as HE will punish on that Day.

26 And no one can bind as HE would bind.

17 नहीं, नहीं, बल्के तुम यतीमों से ज़िज़्ज़त का सुलूक नहीं करते.
18 और ना ही मिस्कीनों को खाना खिलाने के लिये एक दूसरे को तलक़ीन करते हो (यानी उकसाते हो)
19 और तुम मरे हुओं का माल समेट कर हड़प कर जाते हो.
20 और तुम माल से बेहद मुहब्बत करते हो.
21 हरगिज़ नहीं. (जैसा तुम समझते हो). लेकिन जब ज़मीन को कूट कूट कर रेज़ा रेजा कर दिया जायेगा.
22 और आपका रब अपने फ़रिश्तों की कतारों व कतारों के साथ (मैदाने हश्र में) जल्वा नुमां होगा.
23 और उस क़ियामत के दिन जहन्नम को क़रीब लाया जायेगा. तो उस रोज़ इंसान को समझ आ जायेगा, लेकिन तब समझ आने से क्या फ़ायदा.
24 और वो अफ़सोस से कहेगा: "काश! मैंने अपनी इस ज़िंदगी के लिये कुछ नेक काम भेजे होते!"

25 और उसकी जकड़ के जैसी किसी और की जकड़ नहीं.

26 और उसकी जकड़ की जैसी किसी और की जकड़ नहीं.

17 कल्ला बल्ला तुक्रिमूनल्
यतीम ؕ ०

18 वला तहाऽऽज़्ज़ुना अ़ला
तआ़म मिल् मिस्कीन ؕ ०

19 व तअ्कुलू नत्तु रास़ा अक्लल्
लम्मा ؕ ०

20 व तुहिब्बू नल् माला हुब्बन्
जम्मा ؕ ०

21 कल्लाऽ इज़ा दुक्कत् तिल्
अर्ज़ु दक्कन् दक्का ؕ ०

22 व जाऽआ रब्बुका वल् मलाकु
स़फ़्फ़न् स़फ़्फ़ा ؕ ०

23 व जीऽआ यौमइज़िन् बि
जहन्नमा ؕ ० यौमइज़िय्
यतज़क्कर रुल् इन्सानु व
अन्ना ल हुज़् ज़िक्रा ؕ ०

24 यक़ूलु या लैतनी क़द् दम्तु
लि ह़याती ؕ ०

25 फ़ यौमइज़िल्ला यु अ़ज़्ज़िबु
अ़ज़ाबहू अ़ह़द ؕ ०

26 वला यूस़िकु वस़ाक़हू
अ़ह़द ؕ ०

١٧- كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝

١٨- وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝

١٩- وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝

٢٠- وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝

٢١- كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝

٢٢- وَّجَآءَ رَبُّكَ
وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝

٢٣- وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ
يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ
وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ۝

٢٤- يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ
قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۝

٢٥- فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ
عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ۝

٢٦- وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ۝

27 (On the other hand it would be said)- "O you soul! At your complete rest and satisfaction (with your RABB.

28 "Return to your RAB! Well pleased yourself with HIM, and HE with you."

29 "And enter then among MY righteous slaves."

30 "Yes, enter you MY Heaven"

27 (और दूसरी तरफ़ इरशाद होगा) "ऐ नफ़्से मुत्मइन्ना! (अपने रब पर मुकम्मिल इतमीनान रखने वाली रूह).

28 "अपने रब की तरफ़ लौट चल! तू उससे राज़ी, और वो तुमसे राज़ी."

29 "और शामिल हो जा मेरे नेक बंदों में."

30 "और दाख़िल हो जा मेरी बहिश्त में.

NO 90 SURAH BALAD (35)
(THE CITY OF MECCA)

MAKKI, RUKUI, AYATS 20
WORDS 82, LETTERS 347

नं. 90 सूरह बलद (35)
(शेहर मक्का)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 20
लफ्ज़ 82 हरूफ़ 347

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 No. I (i.e. ALLAH) swear by this city (of Mecca)

2 That you (O Messenger!) are free to live in it.

3 And I (i.e. ALLAH) swear by the ties of father and his son.

4 That WE have created man in an atmosphere of toil and struggle.

1 नहीं. मैं (यानी अल्लाह) क़सम खाता हूं इस शहर (मक्का की).

2 के आप (ऐ पैग़म्बर!) इसी शहर के बाशिंदे हैं.

3 और मुझे (यानी अल्लाह को) बाप और उसके औलाद के रिश्ते की क़सम.

4 के हमने (यानी अल्लाह ने) इंसान को बड़ी मेहनत और तकलीफ़ (व मुशक़्क़त) की हालत में रहने वाला बनाया है.

27 याा अय्यतु हन् नफ़् सुल् मुत् मइन्नह् ० ۲۷-يَاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝

28 इर् जिज़्ज़ी इला रब्बिकि राज़िया त़म् मर् ज़िय् यह् ० ۲۸-ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝

29 फ़द् खुली फ़ी ज़िबादी ० ۲۹-فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ۝

30 वद् खुली जन्नती ० ۳۰-وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ۝

नं. 90 सूरा तुल् बलद् (35)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात २० लफ़्ज़ 82 हरूफ़ 347

बिस् मिल्लाा हिर् रह्मा निर् रहीम ०

سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ (٣٥) (٩٠) (ايات ٢٠) (ركوع ١)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 लाा उक़् सिमु बि हाज़ल् बलद् ० ۱-لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝

2 व अन्ता ह़िल् लुम् बि हाज़ल् बलद् ० ۲-وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝

3 व वालि दिंव् वमा वलद् ० ۳-وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝

4 लक़द् खलक़ नल् इन्सानाा फ़ी कबद् ० ۴-لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ۝

5 Does man think that no one has power over him?

6 And he says- "I have squandered a great deal of wealth."

7 Does he think that no one has seen him?

8 Have WE not given him two eyes?

9 And a tongue and a pair of lips.

10 And HE showed him two ways (of good and evil).

11 But he did not dare an attempt to climb the steep ascent of goodness.

12 And how will you comprehend what the steep ascent is?

13 It is to free slave (from debt or slavery).

14 Or to feed in times of hunger.

15 To orphan near in relationship.

16 Or the poor in distress

17 And to be one of those who believe (in ALLAH), and exhort one another to perseverence and exhort one another towards kindness and compassion (i.e. successful).

5 क्या इंसान ने समझ रखा है के उस पर कोई क़ाबू ना पा सकेगा?

6 और वो कहता है के- "मैंने बहुत सा माल बरबाद किया है."

7 क्या वो ये समझता है के उसे किसी ने नहीं देखा?

8 क्या हमने उसे दो आंखें नहीं दीं?

9 और ज़बान और दो होंठ.

10 और उसे (भलाई और बुराई की) दोनों राहें दिखा दीं.

11 मगर उसने (नेकी की) दुश्वार गुज़ार चढ़ाई से गुज़रने की हिम्मत ना की.

12 और तुम क्या जानो के वो दुश्वार गुज़ार चढ़ाई क्या है?

13 वो है किसी की गरदन को ग़ुलामी (या क़र्ज़) से छुड़ाना.

14 या फ़ाके के दिनों में खाना खिलाना.

15 किसी यतीम रिश्ते दार को.

16 या किसी ख़ाक़सार मुहताज को.

17 फिर जो उन लोगों में भी शामिल हो जो ईमान लाये और जो लोगों पर सब्र करने की नसीहत और लोगों पर रहम और शफ़क़त करने की नसीहत करता रहे

5 अ यह् सबु अल् लंय् यक़् दिरा अ़लैहि अह़द् ९ ०	٥- اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۝
6 यक़ूलु अह् लक्तु मालल् लुबादा ५ ०	٦- يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۝
7 अ यह् सबु अल्लम् याराहू अह़द् ५ ०	٧- اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ۝
8 अलम् नज् अ़ल् लहू अ़ैनैन ॥ ०	٨- اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ۝
9 व लिसा नंव् व शाफ़ा तैन ॥ ०	٩- وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۝
10 व हदैना हुन् नज् दैन ८ ०	١٠- وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۝
11 फ़ लक़् त़ाहा मल् अ़क़ा बह् ॥ ०	١١- فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝
12 व मा अद् राका मल् अ़क़ा बह् ५ ०	١٢- وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝
13 फ़क्कु राक़ा बह् ॥ ०	١٣- فَكُّ رَقَبَةٍ ۝
14 औ इत़्आ मुन् फ़ी यौमिन् ज़ी मस्ग़ा बह् ॥ ०	١٤- اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ۝
15 यतीम मन् ज़ा मक़्रा बह् ॥ ०	١٥- يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝
16 औ मिस्कीन मन् ज़ा मत्रा बह् ५ ०	١٦- اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝
17 सुम्मा काना मिनल् लज़ीना आमनू वाता वासौ बिस् सबीर वाता वासौ बिल् मरह़ा मह् ५ ०	١٧- ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝

18 Such will be the companions of the right hand.
19 But those who reject OUR revelations will be the people of the left hand (i.e. unsuccessful).
20 The Fire will overwhelm them from all around.

18 ये ही लोग दाईं बाज़ू वाले हैं (यानी कामयाब हैं)
19 और जिन्होंने हमारी आयात को मानने से इन्कार किया (यानी नाकामयाब)
20 इन पर आग चारों तरफ़ से छाई हुई होगी.

NO 91 SURAH SHAMS (26)

(THE SUN)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 15
WORDS 56 LETTERS 254

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 I (i.e. ALLAH) swear by the Sun and its brightness.
2 And by the moon as it rises up after sunset.
3 And by the day as it shows up the radiance of the Sun.
4 And by the night as it conceals it (i.e. the day).
5 And by the heavens and its wonderful structure.

नं. 91 सूरह् शम्स् (26)

(सूरज)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 15
लफ़्ज़ 56 हरूफ़ 254

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 मुझे (यानी अल्लाह को) क़सम है सूरज की और उसकी रोशनी की.
2 और चांद की जब वो सूरज के डूब जाने के बाद निकलने लगे.
3 और दिन की क़सम जब वो सूरज की रोशनी को नुमाया कर देता है.
4 और रात की क़सम जब वो दिन को छुपा लेती है.
5 और आसमान की क़सम और उसके शानदार बनावट की.

18 उलाइका अस्हाबुल
मैमनह ० ०

19 वल्लज़ीना काफ़रू बि आयातिना हुम अस्हाबुल मश्अमह ० ०

20 अलैहिम नारुम मुअ्सदह ० ०

नं. 91 सूरा तुल् शम्सि (26)

मक्की, रुकूअ 1, आयात 15
लफ़्ज़ 56, हरूफ़ 254

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ०

1 वश् शम्सि व ज़ुहाहा ०

2 वल् क़ामरि इज़ा तलाहा ०

3 वन् नहारि इज़ा जल्लाहा ०

4 वल् लैलि इज़ा यग़्शाहा ०

5 वस् समाइ वमा बनाहा ०

١٨- أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۝

١٩- وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۝

٢٠- عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝

سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

١- وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ۝

٢- وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَاهَا ۝

٣- وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّاهَا ۝

٤- وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ۝

٥- وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ۝

6 And by the earth and its wide expanse.
7 And by the soul and by HIM WHO gave perfection to it.

8 Then gave to it (to soul) enlightenment as to what is wrong and what is right.
9 Truly he succeeds who purifies (his soul).
10 And who corrupts his soul will end up in grief.

11 The Tribe of Samud denied the truth in their rebellious pride.

12 When among them the most wicked (Qidaar bin Saalif) was deputed (to kill the she camel)
13 And the Messenger of ALLAH (Salih 'Allehis Salaam) said:- " It is the she camel of ALLAH. So let her drink on her turn."
14 But those people called him a liar and hamstrung her. So ALLAH doomed them for their sin and destroyed all of them all alike.
15 And HE does not have to fear the consequence of this - - punishment.

6 और ज़मीन की क़सम और उसके वसीअ़ फैलाव की.
7 और क़सम है इंसान के नफ़्स (यानी रूह) की और उस ज़ात की जिसने उसे दुरुस्त बनाया.
8 फिर उस नफ़्स (रूह) को बदकारी से बचने और परहेज़ गारी पर चलने की समझ बूझ दी.
9 तो जिसने अपने नफ़्स को पाक रखा वो ही कामयाब रहा.
10 और जिसने अपने नफ़्स को ख़ाक में गिरा दिया तो वो ही नाकामयाब हुआ.
11 और क़ौम समूद ने अपनी सरकशी की वजह से अपने पैग़म्बर (सालिह् अ़लै हिस् सलाम) को (ऊंटनी के बारे में) झुठलाया.
12 जबके उनमें से एक शख़्स (क़ादिर बिन् सालिफ़) निहायत बद बख़्त, - ऊंटनी को मारने को उठा.

13 और अल्लाह के पैग़म्बर (सालिह् अ़लै हिस् सलाम) ने कहा :- " ये अल्लाह की ऊंटनी है, उसे उसकी बारी पर पानी पीने दो."

14 मगर उन लोगों ने अल्लाह के पैग़म्बर (सालिह् अ॰ स॰) को झुठलाया और ऊंटनी के पांव काट कर उसे मार डाला.

15 और अल्लाह को उनसे बदला लेने के अंजाम का कोई ख़ौफ़ नही :

6 वल् अर्ज़ि वमा तहा हा ۝	٦- وَالْأَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝
7 व नफ़्स सिंव् वमा सव्वाहा ۝	٧- وَنَفْسٍ وَمَا سَوّٰهَا ۝
8 फ़ अल् हमाहा फ़ुजू रहा व तक़् वाहा ۝	٨- فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوٰهَا ۝
9 क़द् अफ़् लाहा मन् ज़क्काहा ۝	٩- قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ۝
10 व क़द् ख़ाबा मन् दस्साहा ۝	١٠- وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ۝
11 कज्जा बत् समूदु बि तग़् वाहा ۝	١١- كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوٰهَا ۝
12 इज़िम् बाअ़्सा अश् क़ाहा ۝	١٢- إِذِ انْبَعَثَ أَشْقٰهَا ۝
13 फ़ क़ाला लहुम् रसू लुल् लाहि नाक़ा तुल्लाहि व सुक़् याहा ۝	١٣- فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝
14 फ़ कज्जा बूहु फ़ आक़ा रूहा ۝ फ़ दम् दामा अ़लै हिम् रब्बु हुम् बि ज़म्बि हिम् फ़ सव्वाहा ۝	١٤- فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْبِهِمْ فَسَوّٰهَا ۝
15 वला यख़ाफ़ु अुक़् बाहा ۝	١٥- وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝

No 92 SURAH LAIL (9)

(THE NIGHT)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 21
WORDS 71, LETTERS 314

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 I (i.e. ALLAH) swear by the night when it covers the day.
2 And by the day as it shines in all its glory.
3 And by HIM WHO created the male and female alike.
4 That your endeavours are for different ends.
5 So he who gives in charity and fears ALLAH.
6 And who accepts what is right (and follows it as well).
7 WE will indeed make easy for him the path to bliss.

8 But for him who hoards and considers himself independent (of ALLAH).
9 And who disbelieves in goodness.

नं. 92 सूरह लैल (9)

(रात)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 21
लफ़्ज़ 71, हरूफ़ 314

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायते रहम वाला है.

1 मुझे (यानी अल्लाह को) रात की क़सम जब वो दिन को छुपा ले.
2 और दिन की क़सम जब वो ख़ूब रौशन हो जाये.
3 और उस ज़ात की जिसने नर और मादा को पैदा किया.
4 के तुम लोगों की कोशिशें मुख़्तलिफ़ क़िस्म की हैं.
5 तो जिसने अल्लाह की राह में दिया और उससे डरा.
6 और जिसने नेक बात को सच माना (और उस पर अमल भी किया)
7 तो हम (यानी अल्लाह) उसके लिये राहत की मंज़िल का रास्ता आसान कर देंगे.
8 और जिसने अल्लाह की राह में कंजूसी की और अल्लाह की ज़ात से बे परवाह रहा.
9 और जो नेक बात को झूठ समझे.

नं० 92 सूरा तुल् लैल (9)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 21
लफ़्ज़ 71, हरूफ़ 314

बिस् मिल्लाहि र्रह्मानि र्रहीम ○

1 वल् लैलि इज़ा यग़्शा ○

2 वन् नहारि इज़ा तजल्ला ○

3 वमा ख़ालक़ज़् ज़ाकरा वल् उन्सा ○

4 इन्ना सअ़्यकुम् लशत्ता ○

5 फ़ अम्मा मन् अअ़्ता वत्तक़ा ○

6 व सद्दक़ा बिल् हुस्ना ○

7 फ़ सनु यस्सिरुहू लिल् युस्रा ○

8 व अम्मा मन् बख़िला वस्तग़्ना ○

9 व कज़्ज़बा बिल् हुस्ना ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ○

٢- وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ○

٣- وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ○

٤- اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ○

٥- فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ○

٦- وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ○

٧- فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ○

٨- وَاَمَّا مَنْ بَخِلَ
وَاسْتَغْنٰى ○

٩- وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ○

10 Surely for him, WE shall ease the way towards adversity.

11 His riches will not help him when he will fall head-long into the pit of fire.

12 It is indeed for us to show the way.

13 And to US belongs the Hereafter and the present life.

14 So I warn you of a blazing Fire

15 No one will burn in it except those who are wretched.

16 Who denies the truth and turns away.

17 But he who fears ALLAH will be far removed from it.

18 And he who spends his wealth that he may grow in virtue.

19 And he is under no one's obligation and needs to return that favour.

20 Except to earn the good-will of his RABB-Most High.

21 And soon he will be content.

10 तो हम उसके लिये तकलीफ़ की तरफ़ जाने का रास्ता आसान कर देंगे.

11 उसका माल उसके कोई काम ना आयेगा जब वो दोज़ख़ के गढ़े में गिरेगा.

12 हमारा काम तो सिर्फ़ राह दिखा देना है.

13 और आख़िरत और दुन्या (दोनोंही) हमारे क़ब्ज़े में हैं:

14 तो मैं (तुम्हें) भड़कती हुई आग से आगाह कर देता हूं.

15 उसमें सिर्फ़ वोही जलेगा जो बद बख़्त होगा.

16 जो सच को भुठलाता है और उससे मुंह फ़ेरता है.

17 लेकिन जो परहेज़ गार रहा-वो उससे बचा लिया जायेगा.

18 और जो अपना माल नेक राह में ख़र्च करता है के अपने आपको पाक कर ले.

19 और इसलिये नहीं देता के किसी का उस पर अह्सान है जिसे वो उतारना चाहता है.

20 सिवाये अपने आली शान रब की ख़ुश् नूदी के लिये.

21 और वो बहुत जल्द ख़ुश् हो जायेगा.

10 फ़ सनु यस्सिरुहू लिल् अुसरा ०

١٠- فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرٰى ۝

11 वमा युग़्नी अ़न्हु मा लुहू इज़ा त रद्दा ०

١١- وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهٗٓ إِذَا تَرَدّٰى ۝

12 इन्ना अ़लैना लल् हुदा ०

١٢- إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝

13 व इन्ना लना लल् आख़िर रा़ता वल् ऊला ०

١٣- وَإِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۝

14 फ़ अन्ज़र्तु कुम् नारन् त लज़्ज़ा ०

١٤- فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝

15 लाा यस्लाहा इल् लल् अश़क़ा ०

١٥- لَا يَصْلٰهَآ إِلَّا الْأَشْقَى ۝

16 अल्लज़ी कज़्ज़बा वाता वल्ला ०

١٦- الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝

17 वासयु जन्नबु हल् अत़्क़ा ०

١٧- وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۝

18 अल् लज़ी युअ़्ती मा लहू याता ज़क्का ०

١٨- الَّذِي يُؤْتِي مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝

19 वमा लि अ़हा दिन् ज़िन् दहू मिन् निअ़्मतिन् तुज़्ज़ा ०

١٩- وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۝

20 इल् लब् तिग़ाआ वज्हि रब्बिहिल् अअ़्ला ०

٢٠- إِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلٰى ۝

21 वाला सौफ़ा यर्ज़ा ०

٢١- وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝

No 93 SURAH DUHAA (11)

(DAY FULL OF LIGHT)
MAKKI, RUKU 1, AYATS 11
WORDS 40, LETTERS 166

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 I (i.e.) ALLAH swear by the fully grown up day full of light.

2 And by the night when it is all still.

3 That (O Messenger! Muhammad Mustafa Sal Lal Laahu 'Allehi Wa Sallam.) your RABB has neither forsaken you nor is HE annoyed with you.

4 And surely what is to come in due course would be better than what has gone before.

5 For soon your RABB will give you so much that you will be well pleased.

6 Did HE not find you an orphan and then gave you shelter?

नं॰ 93 सूरह ज़ुहा (11)

(चढ़ा हुआ दिन)
मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 11
लफ़्ज़ 40, हरूफ़ 166

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 मुझे (यानी अल्लाह को) क़सम है दिन की जब रोशनी ख़ूब फैल जाये.

2 और रात की जब वो देर से सुकून के साथ तारी हो जाये.

3 के (ऐ पैग़म्बर! मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) आपके रब ने ना आपको छोड़ा है और ना ही आपसे नाराज़ है.

4 और यक़ीनन आपके लिये आने वाला दौर - पिछले दौर से कहीं बेहतर होगा.

5 और आपका रब आपको जल्द इतना देगा के आप ख़ुश हो जायेंगे.

6 क्या उसने आपको यतीम नहीं पाया और फिर ठिकाना नहीं फ़राहम किया?

नं. 93 सूरा तुज़् ज़ुहा (11)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 11,
हर्फ़ 40, हरूफ़ 166

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ○

वज़् ज़ुहा ○

वल् लैलि इज़ा सजा ○

मा वद्दा आका रब्बुका वमा
क़ला ○

व लल् आख़िरतु ख़ैरुल् लाका
मिनल् उला ○

वा ला सौफ़ा युअ़् तीका रब्बुका
फ़ तर्ज़ा ○

अलम् यजिद् का यतीमन् फ़
आवा ○

سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- وَالضُّحٰى ۙ

٢- وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۙ

٣- مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ
وَمَا قَلٰى ؕ

٤- وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ؕ

٥- وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ
فَتَرْضٰى ؕ

٦- اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۪

7 And did HE not find you perplexed and then gave you guidance?

8 And did he not find you poor and then made you rich?

9 Therefore treat not the orphans with harshness.

10 And do not drive the begger away.

11 And keep on proclaiming the favours of your RABB.

7 क्या उसने (अल्लाह ने) आपको राह से अनजान नहीं देखा और फ़िर आपको हिदायत नहीं बख़्शी ?

8 और क्या उसने आपको ग़रीब नहीं पाया और फ़िर आपको ग़नी कर दिया ?

9 तो इस लिये यतीमों पर ज़ुल्म ना करना .

10 और मांगने वाले को झिड़कना मत.

11 और अपने रब के अहसानात को बयान करते रहना.

व वाजा दाका ज़ाल्लन्
फ़ हदा ७ ०

8 व वाजा दाका आइलन्
फ़ अग़्ना ८ ०

9 फ़ अम्मल् यतीमा फ़लाा
तक़् हर् ९ ०

10 व अम् मस्साा इला फ़लाा
तन् हर् १०

11 व अम्मा बि निज़्मति
रब्बिका फ़ हद् दिन्स् ९ ०

٨- وَوَجَدَكَ ضَآلًّا
فَهَدٰى ۝

٩- وَوَجَدَكَ عَآئِلًا
فَاَغْنٰى ۝

٩- فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝

١٠- وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝

١١- وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝